पद

भौंन पट में झुलसुली भलकति झोप अपार।

सुरत की मंजु सिंधु में लसति सबंध डार॥ ९६॥

शब्दार्थ

- भौंन पट – भौंहों का कपड़ा/पट (यहाँ भौंहों की रेखा)
- झुलसुली – झूलती हुई, लहराती हुई
- भलकति – चमकती हुई
- झोप अपार – अत्यन्त शोभायुक्त, अनुपम शोभा
- सुरत – सौन्दर्य
- मंजु सिंधु – सुन्दर समुद्र
- लसति – शोभित होती है
- सबंध डार – पक्षी सहित डाल (उपमा रूप में)

भौंन पट में झुलसुली भलकति झोप अपार।

यहाँ कवि नायिका की भौंहों का वर्णन कर रहे हैं।नायिका की भौंहें ऐसे प्रतीत होती हैं मानो किसी पट (कपड़े) पर लहराती हुई कोई सुन्दर रेखा हो। वे भौंहें झूलती-सी, लहराती-सी और चमकती हुई दिखाई देती हैं। उनकी शोभा अपार है।

अर्थात् नायिका की भौंहों की वक्रता और चंचलता उसके सौन्दर्य में अद्‌भुत आकर्षण उत्पन्न कर रही है।

सुरत की मंजु सिंधु में लसति सबंध डार॥

नायिका का सम्पूर्ण रूप मानो सौन्दर्य का सुन्दर समुद्र हो। उस रूप-समुद्र में उसकी भौंहें ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे समुद्र में किसी वृक्ष की डाली पक्षी सहित लहराती हुई शोभायमान हो।

यहाँ भौंहों की तुलना डाल से और नेत्रों की तुलना उस डाल पर बैठे पक्षियों से की गई है। पूरी छवि अत्यन्त सजीव और मनोहर है।

भावार्थ

कवि कहता है कि नायिका की भौंहें अत्यन्त सुन्दर, लहराती और चमकती हुई हैं। उसका सम्पूर्ण शरीर मानो सौन्दर्य का अथाह समुद्र है, जिसमें उसकी भौंहें और नेत्र ऐसे लगते हैं जैसे किसी वृक्ष की डाल पर बैठे पक्षी लहराते हुए समुद्र के ऊपर झूल रहे हों।

इस प्रकार कवि ने अत्यन्त सूक्ष्म और कलात्मक उपमाओं के माध्यम से नायिका के रूप-सौन्दर्य का चित्रण किया है।

1. रस-विवेचन

इस दोहे में श्रृंगार रस (संयोग श्रृंगार) की प्रधानता है।

- नायिका के रूप, भौंहों की लचक, नेत्रों की शोभा और सम्पूर्ण सौन्दर्य का चित्रण किया गया है।
- वर्णन में कोमलता, माधुर्य और आकर्षण है।
- यहाँ स्थायी भाव रति है, जो नायिका के सौन्दर्य-चित्रण से प्रकट होता है।

अतः यह पद संयोग श्रृंगार का अत्यन्त मनोहारी उदाहरण है।

2. अलंकार विवेचन

इस पद में कई अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है—

(1) उपमा अलंकार

- भौंहों की तुलना डाल से
- नेत्रों की तुलना पक्षियों से
- सम्पूर्ण रूप की तुलना समुद्र से

यहाँ "जैसे" शब्द प्रत्यक्ष नहीं है, परन्तु उपमा का भाव स्पष्ट है।

(2) रूपक अलंकार

- नायिका का रूप ही "मंजु सिंधु" (सुन्दर समुद्र) कहा गया है।

  यहाँ उपमेय और उपमान में अभेद स्थापित किया गया है।

(3) अनुप्रास अलंकार

- "भौंन पट", "झुलसुली", "भलकति" आदि शब्दों में वर्णों की पुनरावृत्ति से मधुर ध्वनि उत्पन्न हुई है।

(4) चित्रात्मकता (दृश्य-अलंकरण)

पूरा दोहा एक सजीव चित्र उपस्थित करता है—

मानो समुद्र में डाली लहर रही हो और उस पर पक्षी बैठे हों।

3. छंद-विवेचन

- यह पद दोहा छंद में रचित है।
- दोहा में प्रथम और तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।
- लय और गति अत्यन्त मधुर है, जो भाव के अनुरूप है।

4. काव्य-विशेषताएँ

1. संक्षिप्तता में व्यापकता – केवल दो पंक्तियों में सम्पूर्ण सौन्दर्य-चित्र खींच दिया गया है।
2. सूक्ष्म निरीक्षण – भौंहों की लचक जैसी सूक्ष्म बात पर ध्यान।
3. प्रकृति-सौन्दर्य से तुलना – समुद्र, डाल, पक्षी आदि के माध्यम से रूप-वर्णन।
4. चित्रात्मक शैली – पढ़ते ही दृश्य आँखों के सामने आ जाता है।

समग्र निष्कर्ष

यह दोहा नायिका-सौन्दर्य के अत्यन्त सूक्ष्म और कलात्मक चित्रण का श्रेष्ठ उदाहरण है। कवि ने समुद्र, डाल और पक्षी की उपमाओं द्वारा भौंहों और नेत्रों की छवि को जीवंत बना दिया है। इसमें श्रृंगार रस की मधुर अभिव्यक्ति तथा अलंकारों की सजीव योजना दिखाई देती है।

पद

अजौं तरयोना ही रह्यो श्रुति सेवत इक रंग।

नाक-वास बेसरि लह्यो बासि मुकुतनु के संग॥ २०॥

शब्दार्थ

- अजौं - आज तक
- तरयोना - तरुणा/तरयोना = कर्ण-भूषण (कान का आभूषण)

- श्रुति - कान
- सेवत - सेवा करते हुए, लगे रहना
- इक रंग - एक ही ढंग से
- नाक-वास - नासिका में स्थान
- बेसरि - बेसर (नाक का आभूषण)
- लह्यो - प्राप्त किया
- बासि मुकुतनु के संग - मोतियों के साथ रहकर

अजौं तरयोना ही रह्यो श्रुति सेवत इक रंग।

कवि कहते हैं कि कान का आभूषण (तरयोना) आज तक कानों की ही सेवा करता रहा। वह एक ही स्थान (कान) में लगा रहा और वहीं की शोभा बढ़ाता रहा।

अर्थात् जो आभूषण केवल कान तक सीमित रहा, वह अपने स्थान से आगे नहीं बढ़ सका।

नाक-वास बेसरि लह्यो बासि मुकुतनु के संग॥

परन्तु बेसर (नाक का आभूषण) मोतियों के साथ रहकर नाक में स्थान प्राप्त कर लिया।

यहाँ नाक-वास का अर्थ नासिका में स्थान पाना है। नाक को चेहरे का प्रमुख अंग माना जाता है, इसलिए बेसर को उच्च स्थान मिला।

विस्तृत व्याख्या

यह दोहा दो स्तरों पर अर्थ देता है—

(1) प्रत्यक्ष अर्थ (आभूषण वर्णन)

कवि आभूषणों का वर्णन कर रहे हैं—

- कान का आभूषण कान में ही रहा।
- बेसर (नाक का आभूषण) मोतियों के साथ रहकर नाक में स्थान पा गया।

नाक चेहरे का प्रमुख अंग है, इसलिए बेसर को ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ।

(2) व्यंग्यार्थ (सत्संग महिमा)

यहाँ कवि सत्संग की महिमा बताना चाहते हैं।

- जो व्यक्ति केवल एक ही स्थान पर सीमित रहता है, वह उन्नति नहीं कर पाता।
- परन्तु जो श्रेष्ठ व्यक्तियों (मोतियों) का संग करता है, वह ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेता है।

अर्थात् सत्संग से व्यक्ति का सम्मान और पद बढ़ता है।

भावार्थ

कवि कहते हैं कि कान का आभूषण तो आज तक कानों की ही सेवा करता रहा, परन्तु बेसर मोतियों के साथ रहकर नाक में स्थान पा गया।इस प्रकार श्रेष्ठ संगति से साधारण व्यक्ति भी उच्च पद प्राप्त कर सकता है। सत्संग मनुष्य को ऊँचा उठाता है।